मेरी भावना

(रचियता - पंडित जुगलकिशोर जी मुख्तार)

जिसने राग द्वेष कामादिक जीते सब जग जान लिया।
सब जीवों को मोक्षमार्ग का निस्पृह हो उपदेश दिया।।
बुद्ध, वीर जिन हरि हर ब्रह्मा या उसको स्वाधीन कहो।
भक्ति-भाव से प्रेरित हो यह चित्त उसी में लीन रहो।।१।।

विषयों की आशा नहिं जिनके साम्य-भाव धन रखते हैं।
निज-पर के हित-साधन में जो निश-दिन तत्पर रहते हैं।।
स्वार्थ-त्याग की कठिन तपस्या बिना खेद जो करते हैं।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के दुःख समूह को हरते हैं।।२।।

रहे सदा सत्संग उन्हीं का ध्यान उन्हीं का नित्य रहे।
उन्हीं जैसी चर्या में यह चित्त सदा अनुरक्त रहे।।
नहीं सताऊँ किसी जीव को झूठ कभी नहिं कहा करूं।
पर धन-वनिता पर न लुभाऊँ संतोषामृत पिया करूँ।।३।।

अहंकार का भाव न रक्खूं नहीं किसी पर क्रोध करूं।
देख दूसरों की बढ़ती को कभी न ईर्ष्या-भाव धरूँ।
रहे भावना ऐसी मेरी सरल-सत्य-व्यवहार करूं।
बने जहां तक इस जीवन में ओरों का उपकार करूं।।४।।

मैत्री भाव जगत में मेरा सब जीवों से नित्य रहे।
दीन-दुःखी जीवों पर मेरे उर से करुणा-स्त्रोत बहे।।
दुर्जन-क्रूर-कुमार्ग-रतों पर क्षोभ नहीं मुझको आवे।
साम्य-भाव रक्खूं मैं उन पर ऐसी परिणति हो जावे।।५।।